रामचन्द्रिका में छन्द-योजना

छन्दों का और भावाभिव्यक्ति का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है, क्योंकि जब व्यक्ति भावावेश में होता है तब उसकी वाणी स्वतः छन्दमयी बन जाती है। अतः कहा जा सकता है कि जब आदि-मानव का हृदय भावावेश में वाणी के माध्यम से छलका होगा, तब वह वाणी अवश्यमेवछन्दमयी होगी। यही कारण है कि छन्द का जन्म सुदूर भूतकाल में हो गया था। वेदों की रचना भी छन्दोबद्ध और वह संसार के प्राचीनतम ग्रंथ माने जाते हैं। वैदिक-साहित्य में छन्दों का बड़ा महत्व रहा है और इन्हें, इसीलिए, वेदों के षडांगों में स्थान मिला है।

छन्दों के दो भेद हैं—वैदिक छन्द और लौकिक छन्द। वेदों में प्रयुक्त छन्दों को वैदिक छन्द कहा जाता है और इतर शास्त्रों में, पुराण तथा काव्य आदि में, प्रयुक्त छन्दों को लौकिक छन्द कहा जाता है। लौकिक छन्दों के दो भेद सर्वमान्य हैं—मात्रिक और वर्णिक। जिन छन्दों में वर्णों की विषमता होने पर भी मात्राओं की संख्या निश्चित रहती हैं, इन्हें मात्रिक छन्द कहते हैं, और जिन छन्दों में वर्णों की संख्या एवं लघु-गुरु का स्थान निश्चित होता है, उन्हें वर्णिक छन्द कहते हैं।

रामचन्द्रिका में प्रयुक्त छंद

रामचन्द्रिका में छन्दों का चमत्कार-प्रदर्शन भी एक प्रयुक्त प्रयोजन है, जैसा कि प्रणेता ने स्वयं स्वीकार किया है—

'जागत जाकी जोति जग, एकरूप स्वच्छंद।
रामचन्द्र की चन्द्रिका, बर्नत हौं बहु छंद॥'

अतः यह स्वाभाविक था कि रामचन्द्रिका में अधिकाधिक छन्दों का प्रयोग होता। इसमें कुल मिलाकर ४२ छन्दों का प्रयोग हुआ है जिनमें 24 छंद मात्रिक और 18 छन्द वर्णिक हैं। मात्रिक छन्द ये हैं—दोहा, रोला, धत्ता, छप्पय, प्रज्झटिका, अरिल्ल, पादाकुलक, त्रिभंगी, सोरठा, कुण्डलिया, सवैया, गीतिका, डिल्ला, मधुभार, विजया, शोभना, सुखदा, हरि, पद्मावती, हरि-गतिका, चौबोला, हरिप्रिया और रूपमाला। वर्णिक छन्द ये हैं—श्री, सार, दण्डक, तरणिजा, सोमराजी, कुमारललिता, नागस्वरूपिणी, हंस, समानिका, नराच, विशेषक, चंचला, शशिवदना, शार्दूलविक्रीडित, चंचरी, मल्ली, विजोहा, तुरंगम, कमला, संयुता, मोदक, तारक, कलहंस, स्वागता, मोहनक, अनुकूला, भुजंगप्रयात, तामरस, मत्तगयंद, मालिनी, चामर, चन्द्रकला, किरीटसवैया, सुन्दरी सवैया, तन्वी, सुमुखी, कुसुमांवचिता, वसंततिलका, मोतियादाम, सारवती, त्वरितगति, द्रुतविलम्बित,

चित्रपदा, मत्तयात्तंगर्लीलाकरण दण्डक, अनंगशेखर दण्डक, दुर्मिल, सवैया, इन्द्रवज्रा, रथोद्धता, चन्द्रवर्त्य, वंशस्थविल, प्रमिताक्षरा, पृथ्वी, मल्लिका, गंगोदक, मनोरमा और कमल।

इस सूची को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि रामचन्द्रिका में जितने छन्दों का प्रयोग हुआ है, किसी अन्य काव्य अथवा महाकाव्य में इतने छन्द नहीं मिलते। किन्तु साथ ही यह बताना भी आवश्यक है कि छन्द-योजना की सफलता छन्दों की संख्या पर नहीं, बल्कि उनकी रसानुकूलता और भावानुकूलता पर है। अतः इस बात की परीक्षा कर लेनी आवश्यक है कि रामचन्द्रिका में प्रयुक्त छन्द कितने रसानुकूल और भावानुकूल हैं।

रस और छन्द—रस काव्य की आत्मा है, छन्द उस आत्मा को सशक्त बनाने वाले। इसीलिए रस और छन्द का घनिष्ठ सम्बन्ध माना गया है। इसी सम्बन्ध को ध्यान में रखकर संस्कृत के अनेक आचार्यों ने इस नियम की भी प्रतिष्ठा कर दी है कि अमुक रस की अभिव्यक्ति के लिए अमुक छन्द उचित है। यथा—शृंगार, शान्त और करुण रस की अभिव्यक्ति के लिए मंदाक्रांता, द्रुतविलम्बित, शिखरिणी और मालिनी छन्द अधिक उपयुक्त रहते हैं। इसी प्रकार भुजंगप्रयात, वंशस्थविल और शार्दूलविक्रीडित में वीर, रौद्र और भयानक रस विशेष प्रभावोत्पादक बन जाते हैं। हिन्दी में सवैया और बरवै में शृंगार, करुण और शान्त, छप्पय में वीर, रौद्र और भयानक; नराच में वीर; घनाक्षरी, दोहा; चौपाई और सोरठा प्रायः सभी रसों के लिए उपयुक्त माने गये हैं। केशव ने यद्यपि इन नियमों का कठोरता से पालन नहीं किया है, किन्तु कहीं-कहीं रामचन्द्रिका में इन नियमों का निर्वाह भी हुआ है। यथा—

'भगन कियो भव धनुष साल तुमको अब सालों।
नष्ट करौं बिधि सृष्टि ईस आसन ते चालों।।
सकल लोक संहरहुँ सेस सिर ते धर डारौं।
सप्त सिन्धु मिलि जाहि होइ सब ही तम भारौं।।
अति समल जोति नारायनी कह केसव बुद्धि जाय बर।
भृगुनन्द संभारू कुठार सौ कियो सरासन युक्त सर।।'

यह रौद्र रस का वर्णन है और छप्पय छन्द में वर्णित किया गया है जो काव्यशास्त्रीय नियमों के अनुकूल हैं। इसी प्रकार—

'जुरे प्रहस्त हस्त लै हथ्यार दिव्य आपने।
कुमार अच्छ तिच्छ बान छइयों घने घने।।
कपीस जुद्ध क्रुद्ध भो संहारि अच्छ डारियो।
प्रहस्त सीस मैं तबैं प्रहारि पुष्टि मारियो।।'

यह वीर-रस का वर्णन है जो नराच छन्द में किया गया है। यह प्रयोग भी काव्यशास्त्रीय नियमों के अनुसार है। वंशस्थविल भी बीर-रस के वर्णन के अनुकूल माना गया है। केशव ने अनेक स्थलों पर वीर-रस का वर्णन वंशस्थविल छन्द में ही किया है। यथा—

'तपी जपी बिपुल छिप्र हौं हरौं। अदेव द्वेषी सब देव संहारौं।।
सिया न देहौं यह नेम जी मैं धरौं। अमानुषी भूमि अबानरी करौं।।

काव्यशास्त्र में शृंगार, करुण और शान्त रस की अभिव्यक्ति के लिए सवैया छन्द को उपयुक्त बताया गया है। केशव के अनेक स्थानों पर सवैया छन्द में ही इन रसों का वर्णन किया है। यथा—

'कलहंस कलानिधि खंजन कंज कछू दिन केशव देखि जिए।
गति आनन लोचन पायन के अनुरूपक से मन मानि लिए।।
यहि काल कराल ते सोधि सबै हठि के बरषा मिस दूरि किए।
अब धौं बिनु प्रानप्रिया राह हैं कहि कौन-हितू अवलम्ब हिए।।'

यह सवैया छन्द में वर्णित विप्रलम्भ शृंगार रस का वर्णन है। इस प्रकार हम देखते हैं कि केशव ने रसानुकूल छन्दों का अनेक स्थलों पर प्रयोग किया है, किन्तु इस नियम का इन्होंने कठोरता से पालन नहीं किया। रामचन्द्रिका में अनेक ऐसे वर्णन भी देखे जाते हैं जो काव्यशास्त्रसम्मत छन्द में नहीं हैं।

भाव और छन्द—किसी भी कवि की छन्द-योजना की सफलता भावानुकूल छन्दों का चयन करने में है, अर्थात् छन्द की ध्वनि में भाव मूर्तिमंत हो उठे। केशव इस क्षेत्र में पूर्णतया सफल हैं। इन्होंने अनेक स्थलों पर भावानुकूल छन्दों की योजना की है। यथा—

'सुग्रीब संधानी, मुख-दुति राती, केसव साथहि सूर नये।
आकास-बिलासी, सूर प्रकासी तब ही बानर आय गये।।
दिसि-दिसि अबगाहन सीतहि चाहन, यूथप यूथ सखै पठये।
नलनील ऋच्छपति, अंगद के संग दच्छिन दिसि को बिदा भये।।'

यह वानरों द्वारा सीता की खोज के लिए प्रस्थान करने का वर्णन है। छन्द की गति से ऐसा प्रतीत होता है मानो वानर उछलते-कूदते हुए जा रहे हों। इसी प्रकार—

चंड चरन, छंडि धरन, मंडि गगन धावहीं।
तच्छन, हुई दच्छिन, दिसि लच्छहि नहि पावहीं।।
धीर धरन, बीर बरन, सिंधु तट सुभावही।
नाम परम धाम धरम, राम करम गावहीं।।'

इस छन्द में वानरों की उछल-कूद और भी अधिक मूर्तिमन्त हो गई है।

राम घोड़े की सवारी पर अपनी वाटिका के लिए जा रहे हैं। उस समय का वर्णन यह है—

भोर होत ही गयो सुराज लोक मध्य बाग।
बाजि आनियो सु एक इंगितन्य सानुराग।।
सुभ्र सुम्न चारि हून अंस रेनु के उदार।
सोखि सीखि लेत हैं तो चित्त चंचला प्रकार।।'

इस छन्द में घोड़े की गति स्पष्टतः ध्वनित है। और—

'भगे चय चमू चमूप छोड़ि छोड़ि लछिमनै।
भगे रथी महारथी गयंद बृन्द को गनै।।
कुसै लवै निरंकुसै बिलोकि बन्धु राम को।
उठ्यो रिसाय कै बली बम्यो जु लाज दाम को।।'

इस छन्द में लव-कुश से पराजित होकर लक्ष्मण की सेना के भागने का वर्णन है। छन्द की ध्वनि से ही ऐसा प्रतीत होता है मानो योद्धा क्रमशः पैर उठाते हुए द्रुतगति से भागे जा रहे हों।

इस प्रकार हम देखते हैं कि रामचन्द्रिका की छन्द-योजना सफल और समृद्ध है। रसानुकूल और भावानुकूल छन्द-प्रयोगों ने इस योजना में चार-चाँद लगा दिये हैं। जिस प्रकार चन्द्रमा के तन पर दाग है, इसी प्रकार इस सफल और समृद्ध छन्द-योजना में कहीं-कहीं दोष भी दृष्टिगोचर होते हैं।

आचार्यों ने छन्दों के अनेक दोष बताये हैं जिनमें से दो प्रमुख हैं—पंगु और यति-भंग। जो छन्द अपने प्रवाह में ठीक नहीं है, वह पंगु-दोष से युक्त कहा जायेगा और जिस छन्द में यति का स्थान ठीक न हो, अर्थात् किसी चरण का कोई शब्द टूटकर दूसरे चरण में चला जाये तो वहाँ यति-भंग दोष माना जाता है। केशव की छन्द-योजना में कहीं-कहीं ये दोनों ही दोष मिलते हैं। यथा—

'आगम कनक कुरंग के, कही बात सुख पाइ।
कोपानल जर जाय जनि, सोक समुद्र न बुड़ाइ।।'

इस दोहे के चौथे चरण में एक मात्रा अधिक होने से यहाँ पंगु नामक दोष है। और—

'देखि भरत की चल ध्वजा, धूरिन में सुख देति।
जुद्ध जुरन का मनहुं प्रति मोधन बोले लेति।।'

यहाँ द्वितीय पंक्ति में यति-भंग दोष है। किन्तु ऐसे स्थान नगण्य हैं ।

नवीन प्रयोग—छन्द प्रयोग के क्षेत्र में केशव ने कुछ नवीन प्रयोग भी किये हैं। इन प्रयोगों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। पहला वर्ग संस्कृत से प्रभावित है और दूसरा वर्ग अन्य छन्दों के मिश्रण से युक्त। संस्कृत-काव्यों में कहीं-कहीं डेढ़ छन्द में ही किसी एक भाव को अभिव्यक्त करने की परिपाटी है। हिन्दी में यह परिपाटी प्रचलित नहीं है। केशव ने इस परिपाटी को अपनाया है और अनेक स्थलों पर डेढ़ छन्द में ही अपने भाव को प्रकट किया है। यथा—

'सीसफूल सुभ जर्‌यो जराय। माँगफूल सौहै सम भाय।।
बेसीकुलन की तरमाल। माल भले बेदी युग लाल।।
तम नगरी पर तेज निधान। बैठे मनो बारहों भाव।।'

यह राम के रनिवास की स्त्रियों के सौन्दर्य का वर्णन है।

केशव ने अन्य छन्दों के मिश्रण से युक्त छन्दों का भी प्रयोग किया है। रामचन्द्रिका के उत्तरार्द्ध में 23 वें प्रकाश में दो स्थलों पर चौबोला और जयकारी छन्द का चित्रण है। कहीं चौबोला के दो चरण प्रयुक्त हुए हैं तो कहीं जयकरी के। यथा—

'सादर मन्त्रिन के जु चरित्र। इनके हम पै सुन मखमित्र।
इनहीं लगे राज के काज। इन्हीं ते सब होत अकाज।'

इस छन्द में चोबोला के दो चरण हैं, और—

'कालकूट ते मोहन रीति, मनि गन ते अति निष्ठुर प्रीति।
मदिरा ते मादकता लई, मन्दर उदर मई भ्रम भई।'

यहाँ दो चरण जयकरी के हैं। इसी प्रकार के अनेक उदाहरण रामचंद्रिका से प्रस्तुत किये जा सकते हैं।

केशव की छन्द योजना के विषय में एक बात और उल्लेखनीय है। जिस समय केशव का आविर्भाव हुआ था, साहित्य काव्यशास्त्र के कठोर नियमों से जकड़ा हुआ था। उस समय केशव ने हिन्दी में अतुकांत रचना करके अपनी नवीनता एवं नवीन प्रतिभा का परिचय दिया है। रामचन्द्रिका में यह अतुकांत छन्द मिलता है—

'गुन गन मनिमाता चित्र चातुर्यसाता।
जनक सुखद गीता पुत्रिका पाय सीता।।
अखिल भुवन भर्ता ब्रह्म रुद्रादि कर्ता।
थिर चर अभिरामी कीय जायतु नामी।।'

अंत में, यह कहा जा सकता है कि विस्तार की दृष्टि से, परम्परा की दृष्टि से और नवीन प्रयोगों की दृष्टि से रामचन्द्रिका की छन्द-योजना अद्वितीय है। इस योजना को 'छन्दों का अजायबघर' कहना और मानना उचित नहीं है।